उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)

इण्टरमीडिएट परीक्षा उत्तराखण्ड

अ

डी कोड सं0 (परिषद् कार्यालय द्वारा भरा जायेगा।)

कोड संख्या–

–परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा–

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंकों में)

ाब्दों :

विषय मनोविज्ञान

प्रश्नपत्र पर अंकित संकेतांक– 422(IAR)

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाये–

(उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच

केन्द्र संख्या–

कक्ष निरीक्षक का नाम

परीक्षा कक्ष संख्या– 0 4 दिनांक 17/03/2018

कक्ष निरीक्षक का पूर्ण

इण्टरमीडिएट परीक्षा, उत्तराखण्ड **अ** (12 पन्ने)

(परीक्षक निम्न तालिका में प्रत्ये

'डी' कोड संख्या (परिषद् कार्यालय द्वारा भरा जाएगा)

'डी' कोड संख्या–

'ब' उत्तर–पुस्तिकाओं की संख्या →

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक →

(कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाये)

ब1	ब2	ब3	ब4

विषय मनोविज्ञान प्रश्नपत्र पर अंकित संकेतांक– 422(IAR)

परीक्षा का दिन शनिवार परीक्षा की तिथि 17/03/2018

हस्ताक्षर कक्ष निरी .....

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर–पुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न–पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुख पृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया गया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या–

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक–

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक–

त्रुटि का प्रकार–

दिनांक–

हस्ताक्षर निरीक्षक–

प्र

योग

योग

खण्ड-'क'

प्रश्न-1
उत्तर- बुद्धि के द्वि-कारक सिद्धांत का प्रतिपादन चार्ल्स स्पीयरमेन ने किया।

प्रश्न-2
उत्तर- व्यक्तित्व का पंच कारक मॉडल पॉल कॉस्टा तथा रॉबर्ट मेक्रे ने किया।

प्रश्न-3
उत्तर- मनोगतिक उपागम विचारधारा सिगमंड फ्रॉयड ने प्रतिपादित किया।

प्रश्न-4
उत्तर- दबावपूर्ण जीवन घटनाओं की मापनी का निर्माण ~~मिचेनबॉम~~ होम्स ने किया।

प्रश्न-5
उत्तर- भारत में बीमारियों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण का दसवाँ संस्करण मिचेनबॉम तैयार किया।

प्रश्न-6
उत्तर- कार्ल रोजर्स सेवार्थी- केन्द्रित चिकित्सा के जन्मदाता

नहीं है। ये कथन असत्य है।

प्रश्न-7
उत्तर- पूर्वाग्रह एवं भेदभाव मानव अभिवृत्ति से संबंधित है। ये कथन सत्य है।

प्रश्न-8
उत्तर- समझौता वार्ता (i) सहायतापरक संबंध है।

प्रश्न-9
उत्तर- परामर्श (iii) पारस्परिक संप्रेषण है।

प्रश्न-10
उत्तर- प्राकृतिक विपदा (ii) भूकंप है।

खण्ड-'ख'

प्रश्न-11
उत्तर- **बुद्धिलब्धि** - अल्फ्रेड बिने तथा थियोडर साइमन ने 1905 में बुद्धि का संप्रत्यय MA (मानसिक आयु) तथा कालानुक्रमिक आयु (CA) दिया। इनके अनुसार जिन बच्चों की मानसिक आयु 130 से अधिक है वे अधिक प्रतिभाशाली

बच्चे तथा जिनकी मानसिक आयु 130 से कम होती है अतिश्रेष्ठ बच्चे तथा जिनकी ~~90~~ 90-109 के बीच की होती है वो सामान्य बुद्धि वाले तथा जिनकी बुद्धि 70 से कम होती है। वो मंदबुद्धि वाले बच्चे कम होते है। इसके लिए इन्होने सूत्र दिया जिसके द्वारा बुद्धिलब्धि को मापा जा सकता है -

सूत्र -

$$\text{बुद्धिलब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{कालानुक्रमिक आयु}} \times 100$$

$$IQ = \frac{MA}{CA} \times 100$$

प्रश्न - 12

उत्तर -

दबाव प्रबन्धन तकनीकें -

दबाव प्रबंधन की कुछ तकनीकें निम्न है -

1) **विश्रांति अवस्था** - इसमें व्यक्ति के शरीर के निचले भाग से ऊपर तक शरीर को विश्रांति की अवस्था में रख दिया जाता है। तथा इससे दबाव को कम किया जाता है।

2) **ध्यान प्रक्रियाएँ** - इसमें व्यक्ति को ध्यान करने को कहा जाता है। आँखे बंद करवाई जाती है। तथा एकाग्रता से ध्यान किया जाता है। इससे भी शरीर से थोड़ा दबाव कम होता है। इसमें व्यक्ति लंबी - लंबी साँसे भी लेता है।

इन दोनों तकनीकों के द्वारा दबाव को कम करने का प्रयास किया जाता है।

प्रश्न -13
उत्तर- **मादक द्रव्य दुरुपयोग विकार-**

इस विकार में व्यक्ति अनेक प्रकार मादक द्रव्यों जैसे - शराब, सिगरेट, कोकिन, गांजा, हेरोइन आदि ऐसी गलत वस्तुओं का उपयोग करने लगता है जिसके कारण व्यक्ति के स्वास्थ्य में गलत असर पड़ता है। इन मादक द्रव्यों का उपयोग करने के कारण व्यक्ति में अनेक प्रकार की शारीरिक बिमारीयों के साथ - साथ मानसिक बिमारीयां भी उत्पन्न हो जाती है, जिससे व्यक्ति तथा उससे संबंधित लोग अनेक प्रकार की परेशानियों का सामना करते हैं। ये विकार व्यक्ति के अंदर तब उत्पन्न होता है जब उसे किसी भी प्रकार का कोई दबाव, दुश्चिंता या अवसाद अधिक हो जाता है तो उससे बचने के लिए इन गलत चीजों का प्रयोग करता है। और इस विकार का शिकार बनता है।

प्रश्न-14
उत्तर- **समूह -** समूह दो या दो से अधिक व्यक्तियों की एक ऐसी संगठित व्यवस्था है जिसमें सभी लोगों की एक जैसी अभिप्रेरणाएँ तथा एक जैसे लक्ष्य होते हैं।

कोई व्यक्ति समूह में अपनी आत्मरक्षा, आत्मसम्मान तथा अपनी प्रतिष्ठा की प्राप्त करने के लिए समूहों में शामिल है। समूह में शामिल होने के दो कारण -

1) अपने आत्मसम्मान की प्राप्ति के लिए,
) अपने आत्मरक्षा तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिए,

प्रश्न -15
उत्तर- **चिपको आंदोलन -**

चिपको आंदोलन उत्तराखंड के चमोली जिले के लोगों द्वारा खासतौर पर स्त्रियों द्वारा किया गया हुआ आंदोलन है। इसमें चमोली जिले की बहुत-सी स्त्रियाँ शामिल है। इसका उद्देश्य वनों की रक्षा करना है। क्योंकि जंगल के निकट रहने वाले ये लोग अपना रोजमर्रा की जिंदगी में वनों पर से ईंधन प्राप्त करते है, ये वनों पर आश्रित रहते है। इनका सभी कार्य वनों के ईंधन द्वारा ही प्राप्त होता है। तो ये वनों की रक्षा करना अपना फर्ज समझते है।

ये आंदोलन गौरा देवी ने अपने साथियों के साथ प्रारंभ किया इसमें इन्होंने प्रदर्शन पेड़ो से चिपककर किया गया था।

प्रश्न -16
उत्तर- **प्रेक्षण कौशल -** प्रेक्षण कौशल के कुछ लाभ है:-

उनमें से दो लाभ निम्न हैं-

1) प्रेक्षण कौशल व्यवहार को समझने के लिए उसको व्यवहारपरक तथा अस्तित्वपरक भावनाओं का अध्ययन करता है।

2) प्रेक्षण कौशल में व्यक्ति की समस्याओं को उसके दृष्टिकोण तथा भावनाओं को ध्यान में रखकर किया जाता है।

खण्ड-'ग'

प्रश्न-17
उत्तर-

भावदशा विकार-

भावदशा विकार में व्यक्ति के भावों में अचानक परिवर्तन आ जाता है।

यदि थोड़ी देर पहले कोई व्यक्ति हंसता है अचानक ही उसे क्रोध आने लगे तो ये विकार ही भावदशा विकार कहलाता है। इसमें व्यक्ति को थोड़ी-थोड़ी देर में अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ देने लगता है। यदि जो व्यक्ति इस विकार से पीड़ित है तो उसे क्रोध जल्दी आता है, हंसता जल्दी, रोता जल्दी है तथा चिड़ता भी जल्दी है। यदि इनमें से कोई भी चीज अधिक होती है तो ये दूसरे व्यक्तियों के लिए हानिकारक भी हो सकती है। ये विकार वाले व्यक्ति दूसरों को क्षति भी पहुँचा सकते हैं। ये उनके भावदशा पर

निर्भर करता है कि ये कब कहाँ और कैसा व्यवहार करेंगे। इन रोगियों को सतर्क रहने की आवश्यकता है तथा कुछ लोग इसे शारीरिक बिमारी भी समझते हैं। पर ये एक मानसिक बिमारी होती है। जो अधिक होने पर अत्यधिक भयानक भी हो सकती है।

प्रश्न-18
उत्तर-

छवि निर्माण-

जब हम किसी व्यक्ति से पहली बार मिलते हैं, तो हम अपने मन में उसके प्रति एक छवि का निर्माण कर लेते हैं। सर्वप्रथम हम उसके गुणों और विशेषताओं का आकलन करते हैं। यदि वो सुंदर है तो हम ये सोचेंगे कि हाँ ये लड़की पढ़ाई में भी अच्छी होगी यदि कोई लड़की पढ़ाई में अच्छी है, तो सोचते हैं कि ये अन्य सभी कार्य अन्य क्षेत्रों में भी अच्छी होगी तो हम व्यक्ति के गुणों से ही उसके प्रति अपने मन में एक छवि का निर्माण कर लेते हैं। प्रथम छवि टिकाऊ मानी जाती है। जैसे हम सामान्य शब्दों में कहते हैं- 'First Impression is last Impression' प्रथम छवि व्यक्ति के अनेक कई गुणों को प्रदर्शित कर देती है। हम व्यक्ति के कुछ विशेष गुणों या विशेषताओं के कारण उसके प्रति अपने अंदर एक विशिष्ट छवि का निर्माण करते हैं। ये ही छवि निर्माण की प्रक्रिया कहलाती है।

प्रश्न-19
उत्तर- **पर्यावरण पर मानवीय प्रभाव -**

मानव का पर्यावरण पर प्रभाव का होना ये तो सामान्य बात है, क्योंकि व्यक्ति द्वारा पर्यावरण पर दिन - प्रतिदिन प्रभाव पड़ता है। मानव द्वारा पर्यावरण पर प्रभाव का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है - व्यक्ति जिसे 'घर' का कहता है, जो मनुष्य के आश्रय का स्थान है। इसका निर्माण भी पर्यावरण को परिवर्तित करके ही किया गया है। मानव अनेक प्रकार से पर्यावरण को प्रभावित करता है। जिसे पर्यावरण दिन - प्रतिदिन अत्यधिक दूषित होता जा रहा है। मनुष्य जंगलो को काट रहा है, जंगलो मे आग लगा रहा है। तथा प्लास्टिक का प्रयोग कर उसके जलने से उसके दूषित धुँए के कारण पर्यावरण की शुद्ध वायु को दूषित कर रहा है। इस तरह मनुष्य पर्यावरण को अनेक कारकों से ~~हित~~ अपना गलत प्रभाव डाल रहा है। जिसका उल्टा रूप स्वयं मनुष्य पर ही पड़ रहा है। वायु प्रदूषण के कारण व्यक्ति को अनेक रोग तथा अनेक प्रदूषणों से व्यक्ति अनेक रोगों का सामना कर रहा है।

अतः पर्यावरण पर जैसा प्रभाव मनुष्य डालेंगे उसका उल्टा प्रभाव उन पर ही पड़ेगा।

प्रश्न-20
उत्तर- **श्रवण कौशल -** श्रवण कौशलों को सुधारने के अनेक उपाय होते हैं उनमें

से कुछ उपाय निम्न हैं:-

1) श्रवण कौशलों को सुधारने के लिए व्यक्ति को अपनी एकाग्रता में वृद्धि करनी होगी यदि वो एकाग्र तरीके से श्रवण करे।
2) श्रवण कौशलों को सुधारने के लिए व्यक्ति को अपने आप को सदा सतर्क रखने की आवश्यकता है।
3) श्रवण कौशलों के सुधार के लिए व्यक्ति को अपने आस-पास के पर्यावरण के प्रति समायोजन बनाने की आवश्यकता है।

खण्ड-'घ'

प्रश्न-21
उत्तर-

व्यक्तिगत आत्म -

1) व्यक्तित्व आत्म में व्यक्ति अपने संबंध में होने वाली बातों का अध्ययन करता है।
2) बच्चे जब बड़े होने लगते हैं तो वह अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए पहले जैविक आत्म, फिर सामाजिक आत्म तथा फिर मनोवैज्ञानिक आत्म का प्रयोग करते हैं।
3) व्यक्ति सिर्फ अपने बारे में सोचता है।
4) व्यक्तित्व आत्म में व्यक्ति अपने आत्म के लिए कार्य करता है तथा अपने आत्म को संतुष्ट करने का प्रयास करता है।

प्रश्न

सामाजिक आत्म -

1) सामाजिक आत्म में व्यक्ति समाज के उन्मुख व्यवहार करता है।
2) सामाजिक आत्म मे व्यक्ति समाज के कार्य करता है। जैसे - सहायता करना, किसी को सहयोग देना, एकता बनाए रखना आदि।
3) सामाजिक आत्म मे व्यक्ति समाज के बारे मे सोचता है ना ही सिर्फ अपने बारे मे।
4) इस आत्म मे लोगो का हित भी शामिल होता है।

प्रश्न-22
उत्तर-

व्यक्तित्व विकास की विभिन्न अवस्थाएँ -

सिगमंड फ्रायड ने व्यक्तित्व के विकास की 5 अवस्थाएँ बताई जिसको मनोलैंगिक विकास भी कहा जाता है। यदि इन पाँचो अवस्थाओं में से किसी भी अवस्था मे समस्या आई तो इससे विकास बाधित हो सकता है। तथा ये जीवन भर रहता है।

1) मौखिक अवस्था -

1) मुख एक नवजात शिशु के प्रथम सुख प्राप्ति का केंद्र होता है जिससे वह भोजन ग्रहण करता है, चूसता है, निगलता है काटता है तथा

बहलाता है।

2) शिशु अपने जन्म के बाद से अपने समाज के प्रति अपने आधारभूत तत्व सोच लेता है।

3) जिस वयस्क को संसार एक कटु स्थान लगता है तो जरूर उसके मौखिक अवस्था में कोई समस्या रही होगी।

गुदीय अवस्था -

1) 2-3 वर्ष की आयु में बच्चों में इस अवस्था का आरंभ होता है। वे अपने गुदीय क्षेत्रों के प्रति अनुक्रिया करना सीख जाते हैं।

2) इसमें मल त्यागना, मूत्र त्यागना जैसी क्रियाएँ बच्चा करता है तथा इसमें वो सुख या आनंद का अनुभव करता है।

3) इस प्रकार गुदीय क्षेत्र बच्चे के कुछ आनंदायक संतुष्टि का केंद्र बन जाते हैं।

लैंगिक अवस्था -

1) इसमें व्यक्ति अपने माता-पिता के प्रति कामेच्छाओं के लिए जागरूक हो जाता है तथा उनमें भेद करना सीख जाता है।

2) ये 7 साल से यौवनारंभ तक की अवस्था है।

3) इसमें बालक इडिपस मनोग्रंथि का तथा बालिका इलेक्ट्रा मनोग्रंथि का अनुभव करती है।

4) एक समय के बाद बच्चे को माता-पिता के भेद के बारे में समझ आता है। और वो पिता की भूमिका

स्वरूप तथा माता से तादात्मीकरण स्थापित कर लेते हैं।

काम प्रसुप्ति अवस्था -

इस अवस्था में व्यक्ति काम इच्छाओं के प्रति जागरूक हो जाता है।
व्यक्ति लिंगों के प्रति व्यवहार करना भी सीख जाते हैं।

जननांगीय अवस्था -

इसमें जननांगों पर बल दिया जाता है।
व्यक्ति द्वारा अनेक प्रकार की क्रियाओं को सीखा जाता है।

ये निम्न अवस्थाएँ मानव के व्यक्तित्व के विकास की अवस्थाएँ हैं।

प्रश्न - 23
उत्तर -

मानव स्वास्थ्य पर दबाव के प्रभाव -

दबाव मानव स्वास्थ्य पर अनेक प्रकार से प्रभाव डालता है। दबाव के कारण व्यक्ति अनेक प्रकार के रोगों से ग्रसित हो जाता है।
कुछ प्रभाव निम्न हैं -

1) **संवेगात्मक -** दबाव व्यक्ति के स्वास्थ्य पर अर्थात उसके संवेगों पर एक गहरा प्रभाव डालता है जिसके कारण व्यक्ति चिंतन नहीं कर पाता, एकाग्रता में कमी आती है।

2) **शरीरक्रियात्मक प्रभाव -** दबाव से व्यक्ति के शरीर पर अनेक प्रभाव पड़ते हैं जैसे - हृदयगति बढ़ना, साँस फूलना, उल्टी, बेहोशी, सिर दर्द आदि।

3) **व्यवहारात्मक प्रभाव -** दबाव के कारण व्यक्ति के व्यवहार में अनेक परिवर्तन होते हैं जैसे - उसे दुश्चिंता, अवसाद होता है तथा वो ठीक तरीके से व्यवहार भी नहीं कर पाता है।

4) **संज्ञानात्मक प्रभाव -** इसके कारण व्यक्ति के व्यवहार में उसके जीवन में अनेक बदलाव आते हैं जिनका व्यक्तियों को सामना करना पड़ता है।

इन कारणों के कारण व्यक्ति में अनेक शारीरिक प्रभाव भी होते हैं।

इनये सभी प्रभाव व्यक्ति में अधिक दबाव होने के कारण उत्पन्न हो जाते हैं। जो अत्यंत हानिकारक हो सकते हैं।

प्रश्न -२
उत्तर - **अपसामान्य व्यवहार -**

अपसामान्य व्यक्ति जो सामान्य स्थिति में ना हो वो जो व्यवहार करता है वो अपसामान्य व्यवहार कहलाता है। अपसामान्य व्यवहार मे व्यक्ति कुछ ऐसे कार्य करता है जो एक सामान्य व्यक्ति नहीं करता। ये अपसामान्य व्यक्ति के कुछ विशेषताएं निम्न है -

1) **स्वयं का मूल्यांकन -** इसमे व्यक्ति स्वयं के बारे मे अधिक ऊंचे मूल्यांकन या बहुत कम मूल्यांकन करता है।

2) **लैंगिक कार्य -** इसमे व्यक्ति समाज के मान्य तरीको द्वारा लैंगिक कार्य नहीं कर पाता है।

3) **व्यवहार -** इसमे व्यक्ति गलत व्यवहार करता है चीजें फेंकना बच्चो की तरह तरकते करता है।

4) **बुद्धि -** अपसामान्य व्यक्तियों की बुद्धि सामान्य व्यक्तियों की तुलना मे कम पाई जाती है। ये लोग मानसिक रोगों का शिकार होते है।

इन सभी व्यवहारों के द्वारा अपसामान्य व्यवहार प्रदर्शित होते हैं।

प्रश्न-2
उत्तर- **अभिवृत्ति -**

किसी व्यक्ति की अभिवृत्ति उसके गुणों तथा उसके जीवन से जुड़े हुए पक्षों का अध्ययन करने से हम किसी व्यक्ति के बारे में अभिवृत्ति का निर्माण करते हैं।

किसी व्यक्ति के लिए हम किस प्रकार की अभिवृत्ति रखते हैं वो उसके गुणों पर निर्भर करती है।

अभिवृत्ति के कुछ घटक होते हैं जो निम्न हैं-

1) **संवेगात्मक घटक** - इसमें व्यक्ति के संवेगों से जुड़े पक्षों को शामिल किया जाता है।

2) **व्यवहारात्मक घटक** - इसमें व्यक्ति के कार्य से जुड़े पक्ष होते हैं तथा इन्हें व्यवहारात्मक घटक कहते हैं।

3) **संज्ञानात्मक घटक** - इसमें व्यक्ति से जुड़े जिन्दगी के पक्ष शामिल किए जाते हैं।

ये अभिवृत्ति के कुछ प्रमुख घटक हैं।

प्रश्न-26
उत्तर- **अनुरूपता -** अनुरूपता से आशय ~~व्य~~ किसी व्यक्ति के अनुरूप कार्य करने से है। अर्थात किसी व्यक्ति के अनुसार जब हम कार्य करते है। दूसरे व्यक्ति जो करता है उसे के अनुरूप हम भी कोई करते है वो अनुरूपता कहलाती है।

अनुपालन - अनुपालन से आशय व्यक्ति जब किसी भी कार्य को उसके नियम के अनुसार अर्थात रूटिन के अनुसार करता है तो वो अनुपालन से किया गया कार्य कहलाता है।

खण्ड - 'ड'

प्रश्न-27
उत्तर- **बुद्धि -** बुद्धि पर्यावरण को समझने सविवेक चिंतन करने तथा किसी चुनौति के सामने आने पर उपलब्ध संसाधनो का प्रयोग करने की व्यापक क्षमता से है।

परिभाषा-

बिने के अनुसार, " बुद्धि भली भाँति समझने, कार्य करने तथा समस्या को हल करने की क्षमता से है। "

बुद्धि दूसरों के तथा स्वयं के व्यवहार को समझने का भी कार्य करती है।

बुद्धि परीक्षण के प्रकार -

बुद्धि परीक्षण के अनेक प्रकार हैं - कुछ जो निम्न हैं - इसको तीन हिस्सो में बांटा गया है -

प्रशासन के आधार पर - निजी तथा वैयक्तिक परीक्षण
भाषा के आधार पर - शाब्दिक तथा अशाब्दिक परीक्षण
नमुनो के आधार पर - गति बुद्धि परीक्षण तथा शक्ति बुद्धि परीक्षण

1) निजी तथा वैयक्तिक परीक्षण -

इसमें निजी परीक्षणों में एक बच्चों का ही परीक्षण लिया जाता है तथा किसी विशिष्ट बच्चे का परीक्षण अकेले लिया जाता है तथा इसमें वार्तालाप कर पारस्परिक निर्भरता की आवश्यकता होती है। तथा वैयक्तिक परीक्षणों में एक साथ अनेक बच्चों का परीक्षण लिया जाता है। उनमें संबंध स्थापित करने की आवश्यकता होती है तथा ये बहुत-से बच्चों के साथ किया जाता है।

2) शाब्दिक तथा अशाब्दिक परीक्षण -

इसमें शाब्दिक परीक्षणों में शब्दों की आवश्यकता होती है उनका प्रयोग होता है इसलिए इसे सिर्फ साक्षर व्यक्तियों को ही दिया जाता है। तथा ये अनपढ़ो या बच्चों के लिए नहीं होता है तथा इसके विपरीत अशाब्दिक परीक्षणों में शब्दों का प्रयोग नहीं होता है। तथा इसी अनपढ़

व्यक्ति भी दे सकते हैं। तथा ये बहुत रोमांचक होते हैं। ये लकड़ी के गुटके आदि पर किए जाते हैं।

निष्पादन के आधार पर – इसमें लकड़ी के गुटकों के द्वारा परीक्षण किया जाता है।

गति बुद्धि परीक्षण तथा शक्ति बुद्धि परीक्षण –

इसमें व्यक्ति के गति बुद्धि परीक्षण अर्थात व्यक्ति की बुद्धि का मापन किया जाता है तथा शक्ति बुद्धि परीक्षण में व्यक्ति को अपनी बुद्धि की शक्ति के बारे में अर्थात अपनी शक्ति के बारे में सही सूचना दी जाती है।

प्रश्न-28
उत्तर- **मनोगतिक चिकित्सा** –

मनोगतिक चिकित्सा सिगमंड फ्रायड ने प्रतिपादित की इन्होंने अनेक तरीकों से व्यक्ति के ऊपर अपनी चिकित्सा की इन्होंने सम्मोहन विधि द्वारा व्यक्ति के अंदर के भावों को निकाला तथा स्वप्न विश्लेषण में व्यक्ति को नींद में सुलाकर सपने में आई गई बातों के बारे में बताने को कहा तथा इन्होंने मुक्त साहचर्य विधि द्वारा व्यक्ति को लेटने को कहा और आँखे बंद करके जो दीमाग में चल रहा है।

उसे बोलने को कहा तथा फिर परीक्षणकर्त्ता ने व्यक्ति की आवाज सुन ली। इन्होंने देखा कि व्यक्ति अपने मन की बात दूसरे से बोलकर या बताकर अच्छा अनुभव करते हैं।

सिगमंड फ्रॉयड ने ~~बुद्धि के~~ मस्तिष्क के ~~तीन~~ स्तर बताए -

1) **चेतन** - अपने व्यवहार को प्रोत्साहित करना।

2) **अचेतन** - अपने व्यवहार को प्रोत्साहित नहीं करता।

सिगमंड फ्रॉयड ने ~~व्यक्ति~~ तीन प्रकार की द्वारा चिकित्सा को बताया है -

1) अस्तित्वपरक चिकित्सा
2) व्यवहारपरक चिकित्सा
3) मनोवैज्ञानिक चिकित्सा -

व्यवहार चिकित्सा -

व्यवहार चिकित्सा से आशय हमारे व्यवहार पर प्रभाव के अध्ययन करना व्यवहार चिकित्सा कहलाता है।

प्रत्येक स्थिति में व्यवहार भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है।

व्यवहारपरक चिकित्सा से आशय किसी के व्यवहार में आने वाली परेशानियों का गहनता से अध्ययन करने वाली चिकित्सा से है।